८. उद्योग

थोड़ा याद करो

आकृति ८.१

आकृति ८.१ में दो उद्योगों में होने वाली सिलसिलेवार प्रक्रियाओं को दिखाया गया है । उनका निरीक्षण करो । प्रत्येक चित्र के नीचे चौखट में क्रमांक लिखकर प्रक्रियाओं को क्रमवार लिखो । दोनों उद्योगों के लिए अलग-अलग रंगों की कलम का प्रयोग करो । नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो ।

- इन उद्योगों के नाम बताओ ।
- इन उद्योगों में कौन-कौन- सा कच्चा माल लगता है?
- कच्चे माल का रूपांतरण पक्के माल में कैसे होता है?
- कच्चे माल का पक्के माल में रूपांतरण करने की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

उद्योगों के द्वारा कच्चे माल का रूपांतरण पक्के माल में किया जाता है। यह प्रक्रिया कारखानों में होती है । पक्का माल टिकाऊ, अधिक उपयोगी एवं मूल्यवर्धित होता है । उद्योग अथवा कारखानेदारी द्वितीयक व्यवसायों में आते हैं । संसाधन की उपलब्धता, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास एवं अन्य अनुकूल कारकों के कारण किसी प्रदेश में उद्योगों में वृद्धि होती है और औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिलता है । उद्योगों के कारण मनुष्य के आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। देश के आर्थिक विकास में सहायता मिलती है ।

उद्योगों के स्थानीयकरण के कारक :

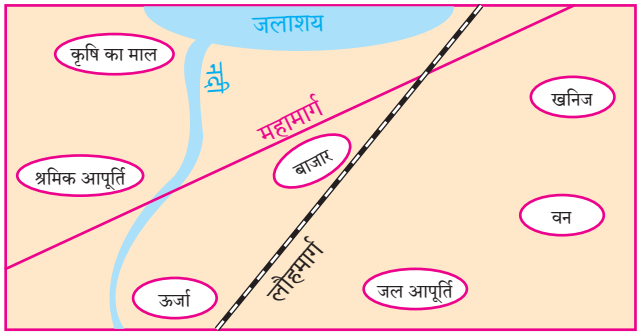

उपरोक्त कारकों का विचार करते हुए नीचे दिए गए उद्योगों के अनुकूल स्थानों को आकृति में अलग-अलग चिह्नों के माध्यम से दिखाओ एवं निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो ।

(१) लौह-इस्पात (२) वस्त्र-उत्पादन (३) चीनी उत्पादन

- प्रत्येक उद्योग के लिए आवश्यक घटकों की सूची बनाओ ।
- तुम्हारे द्वारा सुझाए गए स्थान पर उद्योग की स्थापना के पीछे की अपनी भूमिका स्पष्ट करो ।
- इसी पद्धति का उपयोग कर तुम और किन उद्योगों का स्थान-निर्धारण कर सकते हो?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

किसी प्रदेश में उद्योगों का विकास अनेक कारकों

पर निर्भर रहता है। उदा., कच्चा माल, मानव संसाधन, जल की आपूर्ति, परिवहन सुविधा, पूँजी, बाजार इत्यादि । उपरोक्त घटकों का वितरण असमान होने से औद्योगिक विकास भी समान मात्रा में नहीं होता । कुछ प्रदेश उद्योगों के लिए अनुकूल होते हैं तो कुछ प्रदेशों में केवल विशिष्ट उद्योग ही स्थापित होते हैं । घने वन, पर्वतीय प्रदेश, मरुस्थल जैसे क्षेत्र उद्योगों के लिए प्रतिकूल होते हैं ।

देखो होता है क्या ?

नीचे दिए गए कारकों का वाचन करो और इन प्रदेशों में कौन से उद्योग स्थापित किए जा सकते बताओ :

- परिवहन की उत्तम सुविधाएँ, कुशल मजदूर, निर्बाध विद्युत आपूर्ति
- चूने की खानें, सस्ता मानव संसाधन, निर्बाध विद्युत आपूर्ति एवं बढ़ता नगरीकरण
- फलों के बगीचे, मानव संसाधन, परिवहन की उत्तम सुविधाएँ, विपुल जल आपूर्ति, निर्बाध विद्युत आपूर्ति एवं बाजार

बताओ तो !

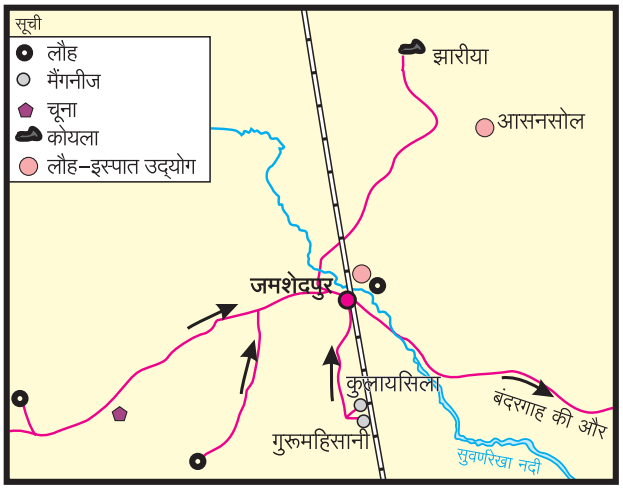

आकृति ८.२ : लौह-इस्पात उद्योग का स्थानीयकरण

आकृति ८.२ का निरीक्षण करो और उत्तर दो :

- जमशेदपुर में कौन सा उद्योग है?
- इस उद्योग के लिए कौन-कौन से कच्चे माल की आवश्यकता होती है?
- कच्चा माल कहाँ से उपलब्ध होता है ?
- इस उद्योग में कोयले का उपयोग किसलिए किया जाता होगा?
- क्या तुम्हारे जिले में इस्पात उद्योग स्थापित करना लाभदायक होगा? सकारण बताओ।

भौगोलिक स्पष्टीकरण

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर देते समय तुम्हारे यह ध्यान में आया होगा कि लौह-इस्पात उद्योग के स्थानीयकरण में प्रमुख कारक-आवश्यक कच्चा माल, ऊर्जा संसाधन, जमशेदपुर के निकट के क्षेत्रों से उपलब्ध होते हैं। इस उद्योग हेतु उपयोग में लाया जाने वाला कच्चा माल भारी होता है । उसे उद्योग केंद्र ले जाना फायदेमंद नहीं होता । इसीलिए कच्चा माल जिस क्षेत्र में उपलब्ध होता है, वहीं उद्योग स्थापित करना लाभकारी होता है । इसलिए जमशेदपुर में लौह-इस्पात उद्योग का स्थानीयकरण हो चुका है।

स्वरूप / प्रकृति के अनुसार उद्योगों का वर्गीकरण :

उद्योगों का प्रकार

लघु उद्योग	मध्यम उद्योग	भारी उद्योग/बड़े उद्योग
मिट्टी के बर्तन बनाना, बेकरी इत्यादि	फलप्रक्रिया उद्योग, गुड़ का कारखाना इत्यादि	सीमेंट, चीनी, लौह-इस्पात इत्यादि

थोड़ा दिमाग लगाओ ।

तुम्हारे क्षेत्र में कौन-सा उद्योग स्थापित करना फायदेमंद होगा?

करके देखो ।

अपने क्षेत्र में किसी एक उद्योग की जानकारी निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर प्राप्त करो ।

- उद्योग का नाम – ☐
- उद्योगपति का नाम – ☐
- कितने कर्मचारी कार्य करते हैं ? ☐
- कौन-सा कच्चा माल उपयोग किया जाता है? ☐
- कौन-सा माल तैयार किया जाता है? ☐
- कारखाने के परिसर में प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए कौन-से उपाय किए गए हैं?
- आप अपने उद्योग के माध्यम से समाज के लिए क्या करते हैं ?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

दिए गए तीनों चित्र उद्योग से संबंधित हैं परंतु उनका

थोड़ा दिमाग लगाओ ।

दिए गए चित्रों से उद्योगों को पहचानो एवं बताओ कि इन उद्योगों के लिए अनुकूल स्थान कौन-से है ?

कार्य एवं स्वरूप अलग-अलग है । इन उद्योगों को कच्चा माल, मानव संसाधन, पूँजी, जगह इत्यादि की आवश्यकता है। इन उद्योगों के स्वरूप के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण किया जा सकता है ।

किसी उद्योग का पक्का माल अन्य उद्योग के लिए कच्चा माल हो सकता है। उदा. चीनी उद्योग से तैयार शक्कर मीठे पदार्थ के रूप में बिस्कुट, मुरब्बा एवं जेली बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है। वैसे ही,

थोड़ा विचार करो ।

नीचे दिए गए तीनों चित्रों का निरीक्षण करो एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दो ।

- 'अ' चित्र में दिखाए गए उद्योग का नाम बताओ ।
- 'अ' एवं 'आ' में दिखाए गए उद्योगों में क्या अंतर है?
- 'इ' में दिखाए गए चित्र में क्या अलग है?
- चित्र में दिखाए गए उद्योगों के प्रकार बताओ ।
- ऐसे अन्य उद्योगों के नाम बताओ ।

देखो होता है क्या ?

उद्योगों के संदर्भ में तालिका पूर्ण कीजिए ।

उद्योग	प्रकार	कच्चा माल
लोहे की छड़ें तैयार करना		
मोमबत्ती तैयार करना		
फर्निचर बनाना		
कागज तैयार करना		
दवाइयाँ बनाना		
चीनी उत्पादन		
गुड़ निर्माण		
अगरबत्ती बनाना		
सूती वस्त्र तैयार करना		
रेल्वे इंजन तैयार करना		
पापड़ बनाना		

लौह-इस्पात उद्योग के द्वारा तैयार होने वाली लोहे की सलाखें एवं चादरें, अभियांत्रिकी, लोहे का फर्निचर इत्यादि उद्योगों में कच्चे माल के रूप में उपयोग में लाया जाता है।

कृषि आधारित उद्योग :

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत में कृषि उत्पादन में विविधता पाई जाती है । इसीलिए कृषि-आधारित उद्योग भी यहाँ बहुत हैं। इन उद्योगों के साथ-साथ कृषि से प्राप्त उत्पादों पर प्रक्रिया करने वाले उद्योगों का भी विकास हुआ है। इनमें दुग्ध व्यवसाय, फल प्रक्रिया, अन्न प्रक्रिया, गुड़ का कारख़ाना इत्यादि का समावेश होता है। कृषि पर आधारित उद्योगों की स्थापना सर्वत्र स्थापित हुई है । वस्त्रोद्योग, चीनी उद्योग जैसे भारी कृषि आधारित उद्योगों का विकास हुआ है।

औद्योगिक विकास :

किसी भी देश के आर्थिक विकास में उद्योगों का निर्माण और विकास का महत्वपूर्ण स्थान होता है। देश के नागरिकों के जीवन के स्तर में सुधार लाने एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने हेतु औद्योगीकरण का विकास होना आवश्यक है। देश के नागरिकों को रोजगार प्राप्त होता है। उनके जीवन के स्तर में सुधार होता है, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होती है, देश के पक्के माल के निर्यात में वृद्धि होती है । इसीलिए विदेशी मुद्रा के भंडार में वृद्धि होती

आकृति ८.३ : गुड़ बनाने का कारखाना

आकृति ८.४ : कोल्हू

आकृति ८.५ : फल-प्रक्रिया

आकृति ८.६ : दाल मिल

है । ऐसे अनेक कारणों को देखते हुए औद्योगीकरण को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है ।

सरकार की ओर से उद्योगों को प्रोत्साहन देने हेतु एवं प्रदेश की कार्यशील जनसंख्या को रोजगार दिलाने हेतु औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना की जाती है ।

देश के आर्थिक विकास में उद्योगों का स्थान महत्वपूर्ण है। इसीलिए सभी देशों में औद्योगिक विकास हेतु सोच-समझकर प्रयास किए जाते हैं। इसीलिए औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना की जाती है। इन क्षेत्रों में स्थापित उद्योगों को विद्युत, पानी, कर इत्यादि में विशेष छूट दी जाती है ।

महाराष्ट्र राज्य औद्योगिक विकास निगम (M.I.D.C.) :

महाराष्ट्र में राज्य सरकार ने १ अगस्त १९६२ के दिन महाराष्ट्र राज्य औद्योगिक विकास निगम की स्थापना की और प्रत्येक जिले में औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना की गई है । इससे राज्य भर में उद्योगों का विकेंद्रीकरण होना अपेक्षित है। महाराष्ट्र की तरह देश में अन्य राज्यों में भी ऐसे निगम हैं । ऐसे क्षेत्रों में मुख्यतः ऐसे उद्योग होते हैं जो एक-दूसरे के पूरक होते हैं । साथ ही, स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध होता है । ऐसे क्षेत्रों में उद्योगों के लिए आवश्यक अलग-अलग सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं ।

बताओ तो !

आकृति ८.७ में दिए गए बिंदुओं का अध्ययन कर उद्योगों की दृष्टि से उन्हें लाभ और समस्या इन दो समूहों में वर्गीकृत करो।

भौगोलिक स्पष्टीकरण

औद्योगिक विकास के कारण कई लाभ प्राप्त होते हैं । साथ ही औद्योगीकरण के कारण कुछ समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं। औद्योगीकरण के कारण प्रदेश के युवकों को रोजगार प्राप्त होता है। साथ ही प्रति व्यक्ति

आकृति ८.७

आय बढ़ने में सहायता मिलती है । कृषिप्रधान देश में कृषि पर आधारित उद्योग-धंधों का विकास आर्थिक विकास हेतु आवश्यक होता है । ऐसे उद्योगों के कारण कृषि और देश का विकास भी होता है । लोगों का जीवन स्तर सुधरता है ।

सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग :

थोड़ा याद करो

- जानकारी प्राप्त करने के माध्यम कौन-से हैं?
- यदि हमें शीघ्र जानकारी प्राप्त करनी हो तो कौन-से माध्यमों से मिलेगी?
- व्हॉट्स ॲप, फेसबुक, गुगल मैप इत्यादि किसके आधार पर चलते हैं?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

सूचना प्रौद्योगिकी आज के युग में एक महत्वपूर्ण अभियांत्रिकी क्षेत्र है। इस क्षेत्र का कार्य संगणक के द्वारा चलता है। इस क्षेत्र में भारत ने अच्छी प्रगति की है। इस उद्योग में कार्यरत कुशल श्रमशक्ति इसका प्रमुख कारण है।

इस उद्योग में तकनीकी जानकारी ढूँढना, प्राप्त करना, विश्लेषण करना एवं उसका संग्रहण करना, आलेखों के द्वारा प्रस्तुत करना, माँग के अनुसार आपूर्ति करना इत्यादि कार्य किए जाते हैं । इन सभी जानकारियों का इंटरनेट के माध्यम से संगणकों, मोबाइलों इत्यादि साधनों के माध्यम से प्रबंधित किया जाता है । इन सभी के लिए विशिष्ट संगणक प्रणाली की रचना करना भी इस उद्योग का एक प्रमुख भाग है ।

आज संगणक एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग बढ़ा है । अनेक प्रकार की जानकारी संगणक में संग्रहित की जाती है एवं विश्व में उसका उपयोग किया जाता है ।

उद्योगों का सामाजिक दायित्व :

किसी उद्योगपति अथवा औद्योगिक समूह के द्वारा समाज के हित अथवा पर्यावरण के संतुलन के लिए किया गया कार्य उद्योगों के सामाजिक उत्तरदायित्व का भाग समझा जाता है।

समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी अथवा सामाजिक प्रतिबद्धता के माध्यम से समाज में अभावग्रस्त/जरूरतमंद व्यक्तियों अथवा संस्थाओं को सहायता कर समाज हित के लिए उपयोगी कार्य करना आवश्यक होता है। इस हेतु से पाँच करोड़ से अधिक मुनाफा कमाने वाले उद्योगपतियों अथवा औद्योगिक समूहों द्वारा प्राथमिकता के आधार पर मुनाफे में से कम-से-कम २% (प्रतिशत) राशि समाजोपयोगी कार्यों के लिए खर्च की जाए । सरकार इस बात पर जोर दे रही है। निम्नलिखित क्षेत्रों में उनकी सहायता अपेक्षित होती है :

- शैक्षणिक सुविधाओं की आपूर्ति
- स्वास्थ्य-संबंधी सुविधाओं की आपूर्ति
- किसी गाँव अथवा क्षेत्र का विकास करना
- निराधार व्यक्तियों के लिए चलाए जाने वाले केंद्रों पर्यावरणीय विकास केंद्रों को सहायता प्रदान करना इत्यादि ।

उद्योगों द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्व पर किए जाने वाले खर्च पर औद्योगिक समूहों को सरकार की ओर से करों में छूट मिलती है ।

थोड़ा विचार करो ।

मानव संसाधन एवं उद्योगों का सहसंबंध बताओ ।

क्या आप जानते हैं ?

औद्योगीकरण एवं पर्यावरण :

उद्योगों के द्वारा कच्चे माल पर प्रक्रिया कर उससे पक्का माल तैयार किया जाता है। ऐसे निर्माण-प्रक्रियाओं के द्वारा उद्योगों के माध्यम से वस्तुओं का उत्पादन होते समय कुछ हानिकारक अवशिष्ट पदार्थों एवं प्रदूषकों का निर्गमन होता है। इससे वायु, जल, ध्वनि एवं भूमि का प्रदूषण होता है। ऐसे प्रदूषण को औद्योगिक प्रदूषण कहते हैं।

औद्योगिक प्रदूषकों के कारण उत्पन्न पर्यावरण एवं प्रदूषण से संबंधित समस्याओं के विषय में आज वैश्विक स्तर पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है। उद्योग के स्थान का निर्धारण करते समय स्थानीयकरण के परंपरागत कारकों के साथ-साथ पारिस्थितिकीय कारकों का भी विचार किया जाने लगा है। कारखानों के कारण होने वाले प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए प्रबंधन द्वारा हानिकारक अपशिष्ट पदार्थों एवं प्रदूषकों को निपटान किया जाना चाहिए ।

ईंधन की बचत करने वाले वाहनों एवं यंत्र-सामग्री का उत्पादन होना चाहिए। प्रदूषण का नियंत्रण, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, पर्यावरण प्रबंधन इत्यादि को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

भारत में औद्योगिक प्रदूषण रोकने की दृष्टि से राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर भी कुछ कानून एवं नियम बनाए गए हैं । उदा. जल एवं वायु प्रदूषण नियंत्रण एवं निवारण अधिनियम, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम इत्यादि। भारत सरकार का केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड प्रदूषण से संबंधित कार्य देखता है । नियम का उल्लंघन करने वाले कारखाने के प्रबंधन इसके लिए उत्तरदायी होता है और दंड का अधिकारी होता है।

देखो होता है क्या ?

भारत के कुछ महत्वपूर्ण सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम स्थापित हुए हैं। उनके संक्षिप्त रूप दिए गए हैं । उनके पूर्ण नाम ढूँढ़ो और कापी में लिखो : BHEL, BEL, HAL, ONGC, NTPC, NTC, SAL, GAIL. उदा. BHEL: Bharat Heavy Electricals Limited

देखो होता है क्या ?

सूचना प्रौद्योगिकी के मुख्य केंद्रों को 'आयटी हब' के नाम से जाना जाता है । भारत में ऐसे केंद्र कौन-कौन से शहरों में विकसित हुए हैं इंटरनेट की सहायता से ढूँढ़ो और उन्हें भारत के मानचित्र पर सूची के साथ दर्शाओ ।

सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग

थोड़ा दिमाग लगाओ ।

- कौन से प्रकार के उद्योगों के द्वारा ग्रामीण भाग से शहरों की ओर आने वाले लोगों के प्रवाह को रोका जा सकता है?
- ये उद्योग कहाँ स्थापित होने चाहिए ?

थोड़ा विचार करो ।

तुम यदि उद्योगपति बन जाते हो तो निम्नलिखित में से क्या-क्या करोगे?

- केवल मुनाफा कमाओगे ?
- एक उद्योग से दूसरा उद्योग बनाओगे ?
- कर अदा कर मुनाफे में से कुछ भाग समाज के लिए खर्च करोगे ?
- नए उद्योगपतियों के उद्भव के लिए प्रयास करोगे ?

जलसाक्षरता – समय की माँग :

जल मानव के जीवन का मौलिक घटक है । बढ़ती जनसंख्या, बदलती प्रकृति, वर्षा की अनियमितता इत्यादि के कारण पिछले कई वर्षों से अनेक देशों में जल की कमी की समस्या तीव्र होती जा रही है । भारत को भी आगामी भविष्य में जल की तीव्र कमी का सामना करना पड़ेगा, यह भारत के जल उद्योगों के एक सर्वेक्षण से पता चला है ।

भारत प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न देश है । भारत की नदियों को वर्षा से जल मिलता है । उपलब्ध जल को रोक कर विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करना आवश्यक है ।

छोटे-छोटे बाँध, नहरें, खेत तालाब, बाँध कर जल का पुनर्भरण करना, पानी का पुनरूपयोग करना, जलप्रदूषण कम करना, उद्योगों से निकलने वाले मलिन पानी पर प्रक्रिया कर उसका उपयोग करना, इत्यादि उपायों के द्वारा योग्य जल प्रबंधन किया जा सकता है।

हम वैयक्तिक आवश्यकताओं के लिए भी पानी बर्बाद न करें और कम-से-कम उपयोग करने का नियम बनाने लें तो पानी की कमी की समस्या पर विजय पाई जा सकती है । जल प्रबंधन हेतु समाज में जागरूकता फैलाना समय की आवश्यकता है ।

देखो होता है क्या ?

- दिया गया चिह्न किस से संबंधित है ?
- इस उपक्रम का क्या लाभ होगा ?
- इस उपक्रम का एवं रोजगार का क्या सहसंबंध है ?

- भारत के कौन से उद्योग ' नवरत्न' हैं ?
- उन्हें नवरत्न का दर्जा क्यों दिया गया होगा?

स्वाध्याय

प्रश्न १. अचूक विकल्पों के सामने चौकोर में (✓) चिह्न करो ।

(अ) औद्योगिक विकास कोप्रत्यक्ष रूप से कौन-सा कारक प्रभावित नहीं करता ?

(i) जल ☐
(ii) बिजली ☐
(iii) मजदूर ☐
(iv) मौसम ☐

(आ) निम्नलिखित में से कौन सा उद्योग लघु-उद्योग है?

(i) यंत्र-सामग्री उद्योग ☐
(ii) जिल्दसाजी उद्योग ☐
(iii) रेशम उद्योग ☐
(iv) चीनी उद्योग ☐

(इ) निम्नलिखित में से कौन से शहरों में सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र नहीं है ?

(i) पुरानी दिल्ली ☐
(ii) नई दिल्ली ☐
(iii) नोएडा ☐
(iv) बेंगलुरु ☐

(ई) उद्योग में से दो प्रतिशत राशि किसके लिए अनिवार्य है ?

(i) आय कर ☐
(ii) उद्योग का सामाजिक दायित्व ☐
(iii) वस्तू एवं सेवा कर ☐
(iv) बिक्री कर ☐

प्रश्न २. नीचे दिए गए कथन सही हैं या गलत ? असत्य कथनों को सुधारो ।

(अ) देश में स्थित लघु एवं मध्यम उद्योग भारी उद्योगों के लिए घातक सिद्ध होते है ।

(आ) देश में स्थित उद्योग देश के आर्थिक विकास का सूचक है ।

(इ) औद्योगिक विकास निगम की स्थापना का उद्देश्य उद्योगों का विकेंद्रीकरण है ।

(ई) निगमित सामाजिक दायित्व प्रत्येक उद्योग के लिए अनिवार्य है ।

प्रश्न ३. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर तीन से चार पंक्तियों में लिखो :

(अ) औद्योगिक क्षेत्र हेतु सरकार की तरफ से कौन-कौन सी सुविधाएं उपलब्ध होती हैं ?

(आ) औद्योगिक विकास का राष्ट्रीय विकास पर क्या परिणाम होता है अपने शब्दों में लिखो ।

(इ) निगमित सामाजिक दायित्व की उपयुक्तता पर अपना मत व्यक्त करो ।

(ई) लघु-उद्योगों की तीन विशेषताएँ बताओ ।

प्रश्न ४. निम्न प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दो ।

(अ) औद्योगिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को स्पष्ट करो ।

(आ) महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम के लाभ लिखो ।

(इ) सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग के महत्व बताओ ।

(ई) भारत की जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए उद्योग स्थापना बेरोजगारी पर एक उत्तम उपाय है । स्पष्ट करो ।

प्रश्न ५. निम्नलिखित कथनों के लिए प्रवाह संचित्र तैयार करो ।

(अ हमारे द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों की खेत से लेकर हम तक पहुँचने की प्रक्रिया लिखो ।

(ब) किसी उद्योग के स्थानीयकरण के लिए आवश्यक कारक लिखो ।

प्रश्न ६. अंतर स्पष्ट करो ।

(अ) मध्यम उद्योग - भारी उद्योग

(आ) कृषि-पूरक उद्योग - सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग

उपक्रम :

अपने गाँव या शहर में निगमित सामाजिक दायित्व के अंतर्गत यदि कोई गतिविधि हुई हो जानकारी प्राप्त करो और कक्षा में प्रस्तुत करो ।

***

GV4YP2